१.चित्र

१.१ पेंसिल से घुमाना/खींचना

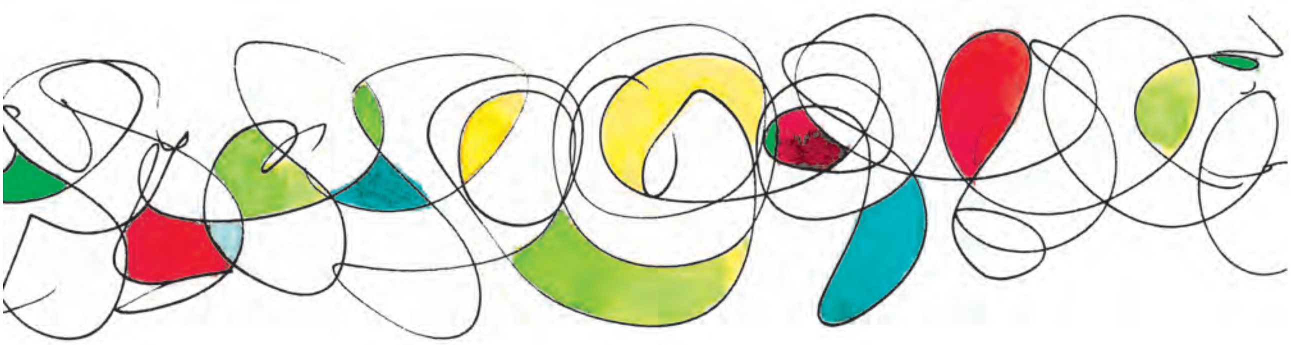

मेरी कृति

पेंसिल से रेखा खींचते समय हाथों और आँखों की गतिविधियाँ, चेहरे के हाव-भाव, मुँह से गुनगुनाना ये सभी बातें सुंदर, सुडोल रेखाओं की निर्मिति करने में मदद करेंगी। अपनी रुचि के अनुसार रेखाएँ खींचने के लिए कहें और उसके कुछ भाग रँगने के लिए कहें।

मेरी कृति

१.२ बिंदुओं की मौज

- आकार

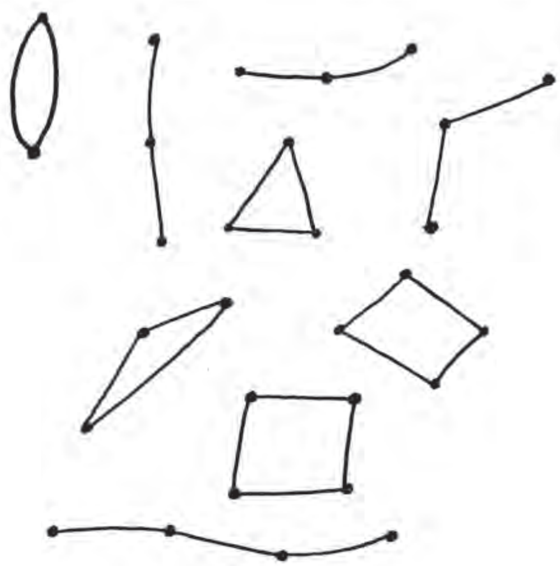

- चित्र

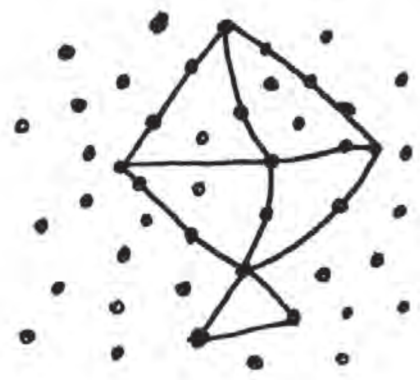

मेरी कृति

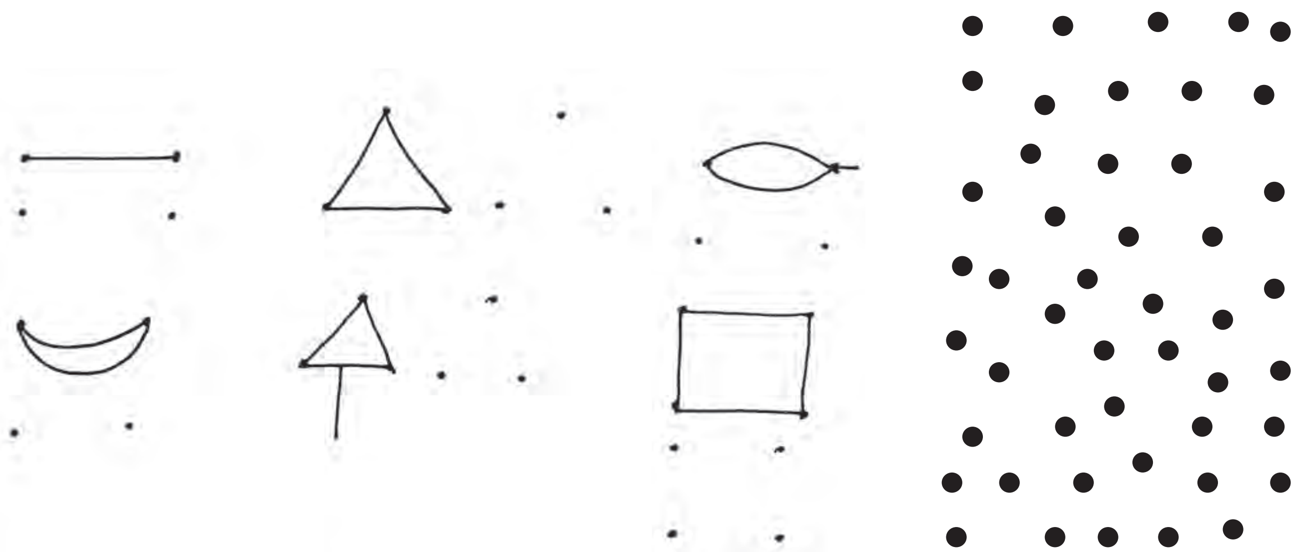

बिंदुओं से आकार : कागज पर कुछ दूरी पर दो बिंदु लेकर उन्हें एक अथवा दो रेखाओं से जोड़ने पर नया आकार तैयार होता है। दो बिंदुओं की तरह तीन, चार, पाँच, छह अथवा उससे अधिक बिंदु लेने पर सहज-सुलभ आकार तैयार होंगे। विद्यार्थियों के गुट बनाकर ऐसे आकार तैयार करवा सकते हैं। तैयार होनेवाले आकारों को रुचि के अनुसार रंगों से रँगने के लिए कहें।

बिंदुओं से चित्र : एक कोरे कागज पर चाहे जितने बिंदु लेकर उन्हें जोड़ने से कौन-कौन से आकार तैयार किए जा सकते हैं, उन्हें खोजने के लिए कहें। बने हुए चित्र को अपने मनपसंद रंगों से रँगने के लिए कहें।

१.३ रेखाओं का खेल

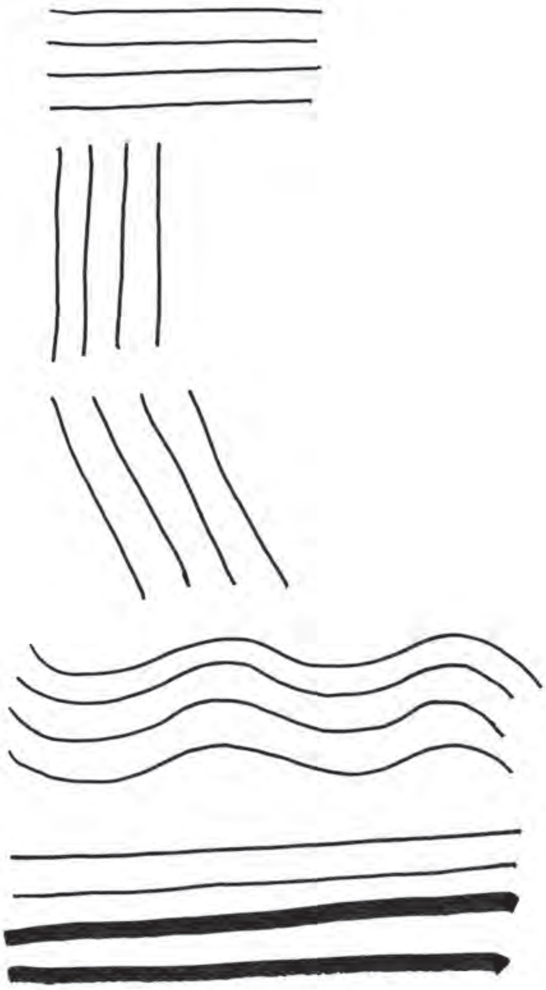

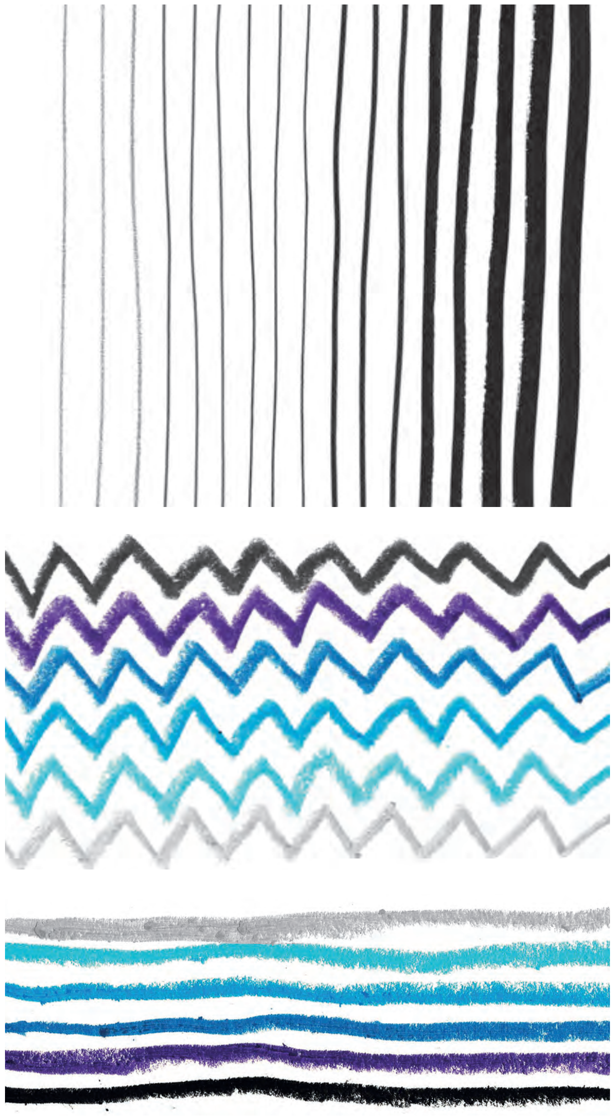

मेरी कृति

दी गई रेखाओं का अभ्यास करने से सुंदर रेखाएँ खींच सकते हैं और कालांतर में सुंदर चित्र बनाने में मदद प्राप्त होती है। उपर्युक्त रेखाओं का अभ्यास करने के लिए पेंसिल, तेल खड़िया, स्केच पेन, मार्कर पेन, पेन आदि का उपयोग कर सकते हैं।

१.४ आसान आकार

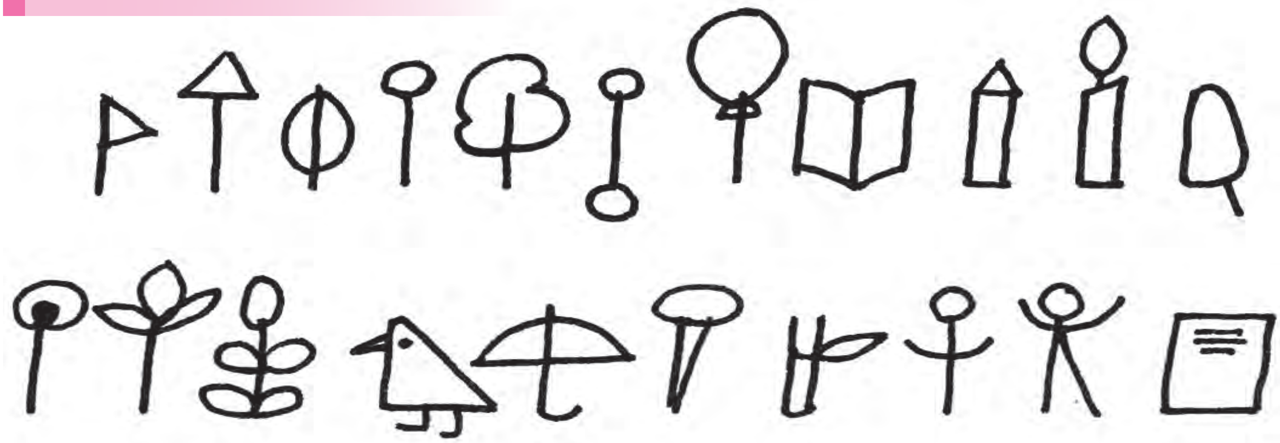

मेरी कृति

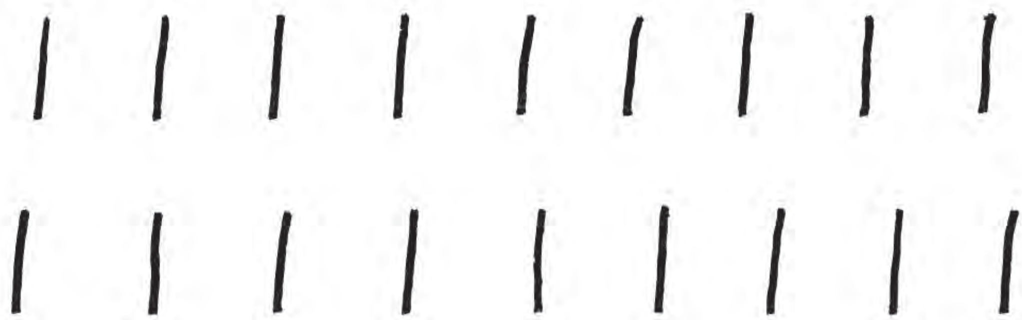

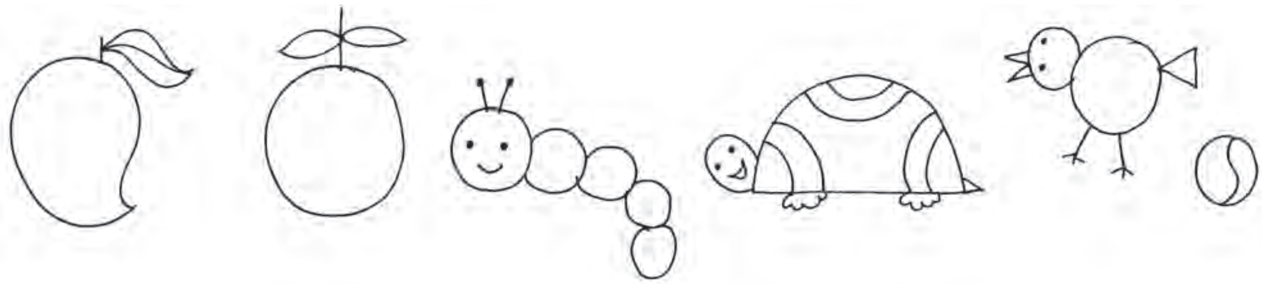

उपर्युक्त कुछ आसान चित्रों का निरीक्षण करके इसी पद्धति से कुछ अन्य विभिन्न चित्र बनाने के लिए कहें।

१.५ छापा कार्य

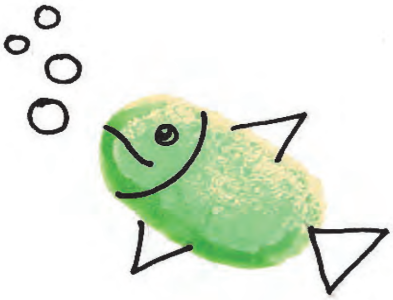

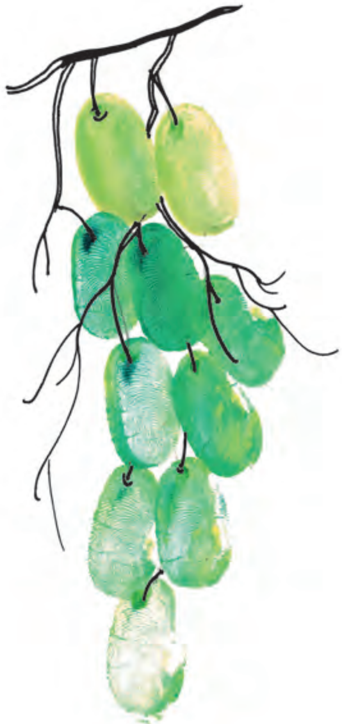

मेरी कृति

बच्चों को रंगों से खेलना बहुत अच्छा लगता है। छापों की सहायता से सुंदर चित्र बनवाएँ। रंग अथवा स्याही को उंगलियों पर लगाकर कोरे कागज पर उनकी छापें लगवाएँ। छापों के आकार में विशिष्ट चित्र को ढूँढ़ने के लिए कहें।

१.६ कढ़ाई कार्य

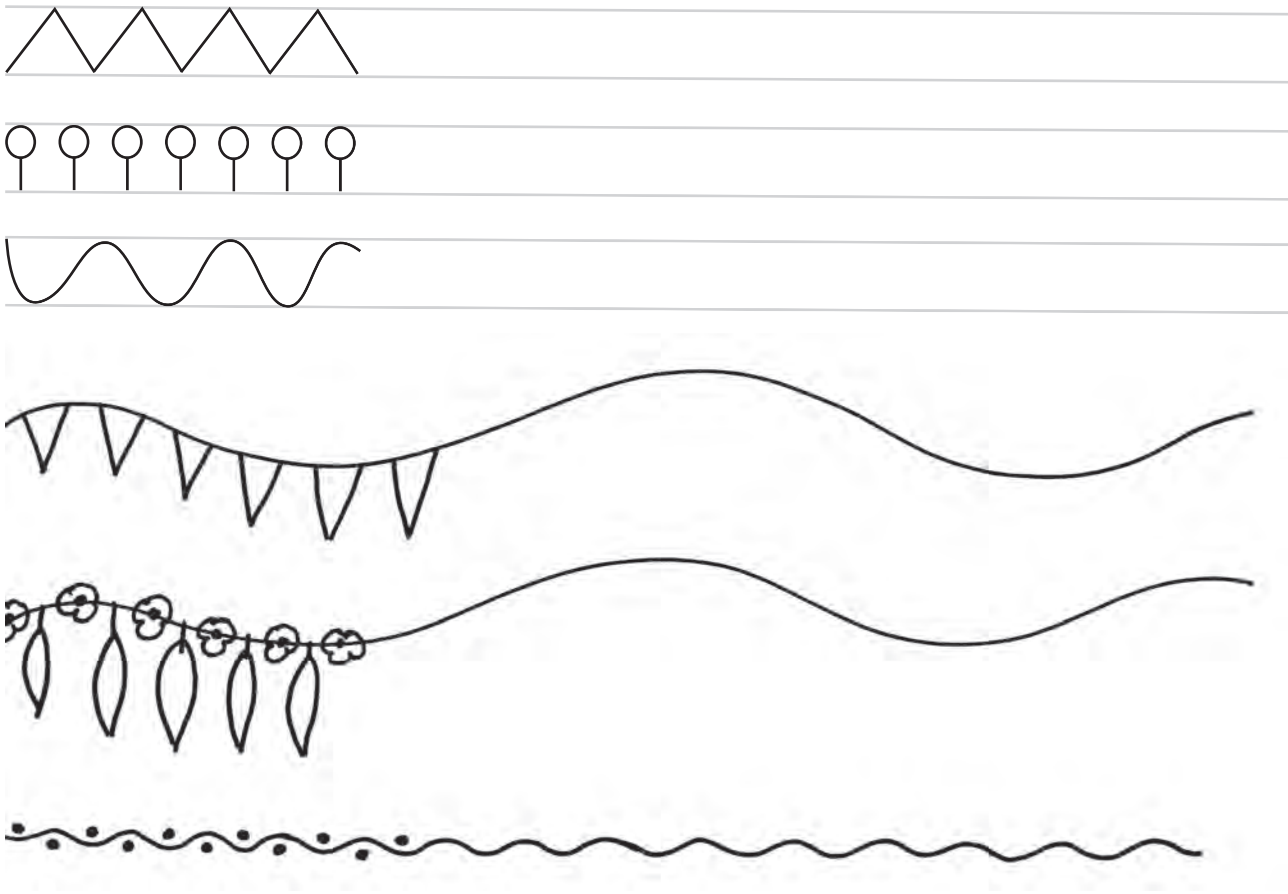

मेरी कृति

रूमाल, कपड़ों पर अंकित कढ़ाई देखकर अथवा उनपर अंकित पत्ते, फूल, वृत्त, त्रिकोण, सर्पाकार रेखाओं को देखकर कढ़ाई कार्य कर सकते हैं। उनमें उपर्युक्त आकार एक के बाद एक बनाना अपेक्षित है। मेरी कृति में इससे भी अलग कढ़ाई कार्य करवा सकते हैं।

१.७ रंगकाम

मेरी कृति

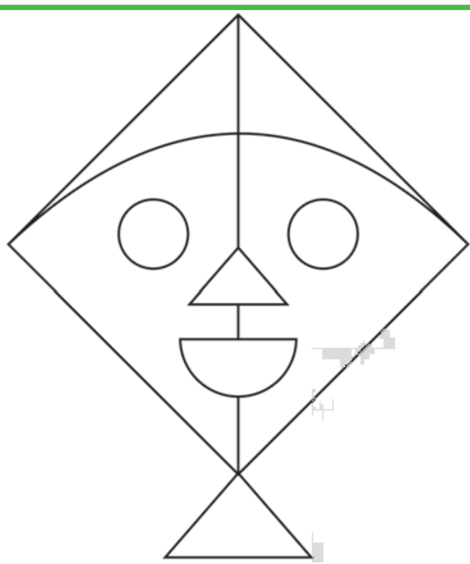

दिए गए गुब्बारों, वृत्तों और त्रिकोण में अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न रंग भरने के लिए कहें।

१.८ सुलेखन

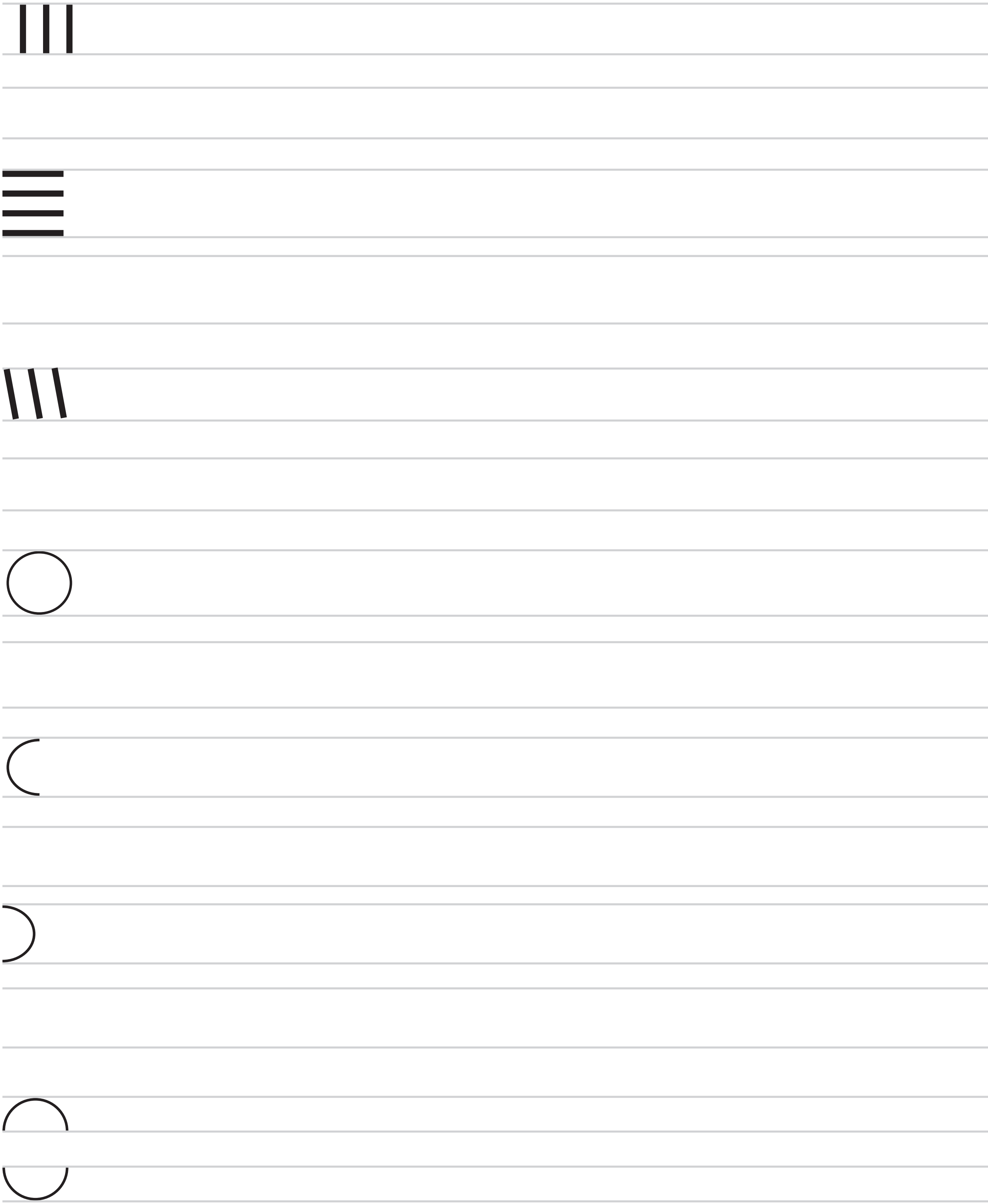

सुंदर लिखावट के लिए बचपन से ही उसका अभ्यास करना आवश्यक है। शब्दों के चित्र को ही 'अक्षर' कहते हैं। चित्र रेखाओं से बनता है। रेखाएँ सुंदर बनानी आ गईं तो लिखावट सुंदर बनती है। सीधी-आड़ी रेखाओं, खड़ी-सीधी रेखाओं, तिरछी-सीधी रेखाओं, गोलाकार रेखाओं और अर्ध वृत्ताकार रेखाओं का अभ्यास करने से लिखावट सुंदर होने में मदद मिलती है।

१.९ मेरे मित्रों के चित्र

चित्र में निहित भावनाओं को पहचानें परंतु उनमें त्रुटियाँ न निकालें क्योंकि यह चित्र विद्‍यार्थियों की स्वनिर्मिति है।

१.१० मेरे चित्र

उपर्युक्त रिक्त स्थान में अपनी रुचि के अनुसार चित्र बनाने के लिए कहें।